सुख धाम और शान्ति धाम दोनो का मालिक बाप ही है। ऐसे नही कि सुखधाम मे रहते है। बाप कहते है मेरा रहना सदैव शान्ति धाम मे ही होता है। थोड़ा समय इस दुःखधाम आना पड़ता है। अब सारे विश्व पर रावण राज्य है। समुन्द्र मे कितने कच्छ-मच्छ है जिनको पकड़ कर खा जाते है। जंगलो मे कितने जनावर है अनेक शिकार करते है। समुन्द्र मे भी अथा है। जो खाते है। स्वर्ग मे यह नही खाते है। वहाँ वैष्णव है। विष्णु याँ वैशनव बात एक ही है। बच्चे जानते है हम विश्व का राज्य लेने लिये पुरुषार्थ कर रहे हैं। विष्णु पुरी क्या है तो है वो मनुष्य नही जानते है। तुम जानते हो। तुम बच्चों को कितनी नालेज मिलती है। नालेज से ही बड़ा मर्तवा मिलता है महाराजा महारानी बनने का। पढ़ाई से तो फिर भी कुछ फायदा होता है। तुम्हारी तो अथाह कमाई होती है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार। जितना जो पुरुषार्थ करे। आत्मा ही पढ़ती है परमात्मा सेके दुनियां मे कोई भी नही जानते है। समझते है कि आत्मा निराकार है। परमात्मा भी निराकार है। परन्तुनाम ही भूल गये है। बच्चों को अब ज्ञान है कि आत्मा ही सारा पार्ट बजाती है। दुनियां मे कोई भी यह बाते बता नही सक्ते है। यह साधु सन्त आद सब है दुर्गतीमार्ग वाले। और रावण राज्य के। सारी दुनियां ही तुम्हारे आपोजिट है। अब तुम सोने की नगरी मे चलने की तैयारी कर रहे हो। जानते हो अच्छे-2 सोने के महल बनेंगे यह करेंगे वह करेंगे। कितनी खुशी की बात है। परन्तु जो सर्विस पर होगें तो श्रीमत भी उनको ही मिलेती रहेगी और वो चलते रहेंगे। बाप कहते है नगें बनो। शरीर को छोड़ दो। पुरानी दुनियां को भूल जाओ। हम जा रहे है शान्ति धाम मे। फिर सुखधाम मे आवेंगे। खेल्या है नां। पतित पावन गाईड-पण्डा यह सब इन्ही के नाम है। तुम जानते हो हम बृाह्मण इनके सामने बैठे है। हम यह बाजोली खेलते रहते है। सन्यासी लोग ऐसे बजोली खेलते-2 तीर्थ यात्रा पर जाते है। तुमको तो बाप कहते है कि सिर्फ घर मे बैठे बाप को याद करो। स्वदर्शन चक्रधारी बनो। पवित्र रहना तो अच्छा ही है नां। यह है ऐम आब्जेक्ट। ऐसे पवित्र वैष्णव अहिंसक बनना है। तुम हो सौभाग्य शाली बच्चे बेहद के बाप के। वो समझते है कि कृष्ण ने पढ़ाया। तुम जानते हो कि कृष्ण की आत्मा तो पढ़ती है पढ़ाती नही है। सतयुगमें अपने शरीरमें होगी तो भी वो पढ़ेगी पढ़ावेगी थोड़ेही। बाप कहते है कि तुम कितने लक्की हो जो कि ईश्वर की सन्तान बने हो। तमोप्रधान से सतोप्रधान बनना है। इसलियेही कहते है कि मुझे याद करो और वर्से को याद करो। तक्लीफ की बात ही नही है पवित्र रहना तो अच्छा ही है नां। ओम

11-3-67, रात्रीक्लासः- यह है नया अनुभव जो तो कोई और सुना ही नही सक्ते है। पहले-2 सुनानाहोता है कि हम रचता बाप और उनकी रचना की आदमध्य अन्तको जान गये है। अर्थात हम तो आस्तिक बन गये है। त्रिकाल दर्शी भी बन गये है। वो विचारे समझते है कि गीता ऐप्पीसोड द्वापुरमें हुआ। बाप कहते है द्वापुर मे पतित पावन आकर राजयोग कैसे सिखा सकेंगें। बाप ही कहते है कि मुझ अपने बाप को याद करो। एकज भूल से राजाई जाती है फिर बाप आकर राजाई दिलाते है। बाप ही आकर अभुल बनाते है तो राजाई मिल जाती है। हम बच्चों को अन्दर मे अपार खुशी होनी चाहिये। मनुष्य कोई की सदगति कर नही सक्ते है। यह बाते भी है सर्व का सदगति दाता एक परमात्मा है। गुरु लोगकोई का सदगति दाता नही है। भक्ति है ही दुर्गती। ज्ञान है सदगति का मार्ग। ज्ञान दिन भक्ति है रात। रातदुर्गती दिन फिर सदगति हुआ नं। इन गुरु लोगों को तो शास्त्रों का बहुत अंहकार है। इनको कहा ही जाता है भक्ति मार्ग। ज्ञान और भक्ति। ज्ञान माना ही दिन। ब्राह्मणों का दिन और भक्ति माना रात। रात भी ब्राह्मणों की ही कहेंगें। अब फिरतुम रात से दिन मे जा रहे हो। यह है संगम युग। हर एक मनुष्य कमाई पिछाड़ी पड़े हुये है। सन्यासियों को भी धन मिलता है तो धनवान बन जाते है। अब तुम जानते हो के हम बाप से खजाना लेने आये है। धनवान भव। पुत्रवान भव। तुम जानते होकि योग बल से हम

से हम पवित्र बनते हैं। यह तुम सच्ची कमाई करते हो जो ही साथ जावेगी। शिव बाबा आकर यह अविनाशी ज्ञान रत्न देते हैं। पढ़ाई से आमदनी होती है ना। पढ़ाई से ही बैरिस्टर बन जाते हैं। बाप कहते हैं मैं भी पढ़ाता हूँ। बाप कहते हैं मैं तुमको 21 जन्मों लिये धनवान आयुशवान बनाता हूँ। हैल्थ भी देता हूँ। वो है ही अमरपुरी। तुम अमर बनते हो। शिव जयन्ती पर तुम अपने बाप की जयन्ति मनाते हो। समझाने लिये ही बत्तियाँ आद जलाते हो कि कोई पूछे। मनुष्यों को रास्ता बताते लिये ही शो करते हैं। बाप कहते हैं अभी बच्चे तुम अपवित्र बन गये हो। नई दुनियाँ में भारत पावन था। अब पुरानी दुनियाँ में पतित हो गया है। इसलिये ही सभी पुकारते हैं कि हे पतित पावन आओ। वो बाप आकर तुम बच्चों को सुनाते हैं तो यह भी सुनते हैं। एक्ज भूल है जो कि गीता में भूल कर दी है। ऊँच ते ऊँच भगवान तो शिव है। फिर है पहले-2 बिछड़े हुये यह ल-न। यह भी याद रखना है कि हम तो नंगे आये थे अब नंगे जाना है। अपवित्र आत्मा जा नहीं सकती है। पवित्र बनाने वाला एक ही बाप है। सभी जीवात्मायें पटधारी हैं। बाप आकर एक ही धर्म की स्थापना करते हैं। तुम जानते हो कि बाप स्थापना कर रहे हैं। स्थापना पूरी हो जावेगी फिर विनाश शुरू हो जावेगा। तुम ऐसे भी नहीं चाहते हो कि विनाश जल्दी हो जावे तो हम स्वर्ग में जावें। जावेंगे तो बाप से बिछड़ जावेंगे। यहाँ तो बहुत अच्छी नालेज मिलती है। फिर देवता बनेंगे तो डिग्रेड हो जावेंगे। नालेज नहीं रहेगी। बाप नालेज फुल है तो तुम भी नालेज फुल बनते हो। खुशी तो बच्चों को अपार होनी चाहिये। बाबा बाप भी है टीचर भी है गुरू भी है फिर साथ में भी ले जावेंगे। साजन आये ही हैं सजनियों को ले जाने के लिये। सुन्दर बना कर ले जावेंगे। बार-बार यही याद करो। तुम बच्चों को बाप की और सृष्टी चक्र की स्मृती आई है। तुम ब्राह्मण कहलाते हो। तो तुमको सच्ची ही गीता सुननी है। रहम दिल बनना है। मनुष्य बिलकुल अन्धेरे में हैं अब तुमको सोझरे में लाना है। मनुष्य बिलकुल अन्धे हैं अन्धों को लाठी से रास्ता बताया जाता है कि कहीं ठोकरे नहीं खावे। मनुष्य आधा कल्प के रोगी हैं। अब तुम आधा कल्प के लिये निरोगी बनते हो। तुमको लव शिव बाबा में रखना है। चित्र भी इनका (ब्रह्मा बाबा) का निकाल कर क्या करेंगे। याद तो शिव बाबा को ही करना है। देहधारी कोई को भी याद नहीं करना है। यह भी कहते हैं मैं कोशिश करता हूँ शिव बाबा को याद करने की। बाबा कहेंगे यह भी तो पतित ही हैं नां। यह पावन बन रहे हैं। यह भी तुम्हारे ही जैसा स्टुडन्ट है। सिर्फ इनको फालो करना है क्योंकि यह याद में अच्छा रहते हैं। इनसे सीखना है। याद की यात्रा है नष्टव्न। पढ़ाई भी बहुत सहज है। रोज रात को नोट करो कि सारा दिन में क्या किया। हर बात में बाप से राय लेनी है। यहाँ पैसे आद की तो बात ही नहीं है। मम्मा क्या लेकर आई थी। कुमारियाँ तो फ्री हैं। कुमारियों पर कोई भी बोझा नहीं होता है। अगर कुछ है तो समझते हैं कि इसी काम में ही लग देवें। उस गवर्मेन्ट में कितना पदमों का उनका खर्चा होता है। बाप तुमको विश्व की राजाई प्राप्त कराते हैं। जिसमें कि खर्चा कुछ भी नहीं है। तुम बच्चों को अन्तर्मुखी हो खुशी में रहना है। जिन्होंने कल्प पहले वर्सा लिया होगा वो ही आकर सुनेंगे। दिल शिकस्त नहीं होना चाहिये। दुनियाँ में तो अन्धकार लगा पड़ा है। यह बाप जो रत्न देते हैं वो है लाखों की मिलकियत। वो तो भक्ति के खक (तिनके) हैं। भक्ति है ही दुर्गति के लिये। व्यापारी वो तो जो कि पूरा पोतामेल रखे रोज का। तो तुम्हारी उन्नती बहुत होगी। खबरदार भी रहेंगे। भूल हो जावे तो कान पकड़ लेना चाहिये। फिर हम ऐसी भूल नहीं करेंगे। बाबा को लिख भेजो तो भूल कटा जावे। कहा गुनाह-2 कहते हैं नां। अब सम्मुख राय देते हैं। अन्दर बाहर सच्चे बच्चे पर बाप को भी रहम रहता है। अन्दर एक बाहर दूसरी होगी तो नुकसान होगा। ओ